गण्डमूल नक्षत्रों के फल–एक शोध

सुनील जैन, गुड़गांव

हमारे शास्त्रों में निम्नलिखित 6 नक्षत्रों को गण्डमूल नक्षत्र बताया गया है।

(1) रेवती, (2) अश्विनी, (3) ज्येष्ठा, (4) मूल, (5) आश्लेषा, (6) मघा

उपरोक्त नक्षत्रों में उत्पन्न बालक को गण्डमूलक कहते है। गण्डमूल नक्षत्रों में उत्पन्न जातक माता, पिता, बहन, भाई, धन, व्यवसाय, के विषयों में तथा स्वयं अपने स्वास्थ्य एवं आयु के सम्बन्धों में अशुभ माने जाते है। यदि भाग्यवश जीवित रहे तो वह धन, धान्य, भूमि, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होते हैं।

ज्येष्ठा श्लेषा रेवतीनामान्ते घटिकाद्वयम्।

आदौ मूलमघाशिवन्या भगण्डं च चतुर्घटी।।

तद गण्डान्तं स्यात् चतुर्नाडिकं।

हि यात्रा जन्मोद्वाह–कालेष्वनिष्टम्।।

ज्येष्ठा, आश्लेषा और रेवती के अन्त की दो–दो घड़ियां और मूल मघा, अश्विनी के प्रारंभ की दो–दो घड़ियां गण्डान्त कहलाती है, इस प्रकार दो नक्षत्रों से युक्त चार घड़ियां गण्डान्त मानी गई है जो जन्म, यात्रा एवं विवाह आदि कार्यों में अनिष्टकारी मानी जाती है।

अश्विनी, मघा एवं मूल नक्षत्र की पहिली 3 घड़ियों में दिन या रात में जन्म हो तो बालक/कन्या के माता, पिता और स्वयं अपने शरीर के लिये अरिष्टकर होता है। रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रों में उत्पन्न बालक माता पिता एवं बड़े भाई को अशुभ होता है। परन्तु नक्षत्र पूजन एवं शान्ति कराने से कल्याण होता हैं।

नक्षत्रों के चरण भेद अनुसार फल

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते है तथा हमारे शास्त्रों में लिखा है की प्रत्येक नक्षत्र का प्रत्येक चरण अशुभ फल नही देते हैं इसलिए प्रत्येक नक्षत्र के सभी चरणों के फल अलग अलग बताये गये हैं।

(1) रेवती नक्षत्र चरणों के फलः–

पौष्णादि पादे नृपति द्वितीये सचिवस्तथा।

तृतीये सुख साधन सम्पन्न्श्चतुर्थे वहुकष्टभाक्।।

रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो बालक राजा समान ऐश्वर्यवान्, दूसरे चरण में मंत्री समान धनी एवं अधिकार सम्पन्न, तीसरे चरण में पैदा हो तो सुख साधनों से सम्पन्न परन्तु चतुर्थ चरण में उत्पन्न बालक अनेक प्रकार से कष्ट भोगता है। इस नक्षत्र की अन्तिम दो घडियां गण्डान्त के अरिष्ट से विशेष प्रभावित मानी जाती हैं। इस नक्षत्र का स्वामी ग्रह बुध है तथा राशी मीन हैं।

(2) अश्विनी नक्षत्र चरणों का फलः–

अश्विन्याः प्रथमे पादे निश्चितं बाध्यते पिता

द्वितिये अपव्यय सम्पत्तिस्तृतीये सचिवो भवेत।

चतुर्थे नृपत्तिं विद्यादिति सद्गुरू भाषितम्।।

अश्विनी नक्षत्र के पहले चरण में उत्पन्न जातक पिता को कष्ट एवं धनहानि आदि अशुभ फल देता है। दूसरे चरण में धन का अपव्यय, तीसरे चरण में पिता को आकस्मिक यात्रा तथा चौथे चरण में जातक स्वयं के लिये तथा अपने शरीर के लिये अनिष्टकारी होता है। इस नक्षत्र का स्वामी केतु तथा मेष राशि होती है।

(3) आश्लेषा नक्षत्र चरणों के फलः–

शर्पोशे प्रथम राज्यं, द्वितीये तु धनक्षयः ।

तृतिये जननी नाशाश्चतुर्थे अरिष्ट पितुः।।

आश्लेषा के प्रथम चरण मे जन्म हो तो जातक को राज्य तुल्य सुख के साधन उपलब्ध होते हैं। दूसरे चरण मे जन्म हो तो धन की हानि, तीसरे चरण में माता तथा मातुल पक्ष को हानि होती है, चतुर्थ चरण में पिता को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

आश्लेषा सर्वपादेषु शान्तिः कर्म समाचरेत प्रयत्नतः।।

परन्तु विद्वानाचार्यों के अनुसार आश्लेषा नक्षत्रों के सभी चरणों में पूजा आदि करा के शान्ति करानी चाहिए। इस नक्षत्र का स्वामी बुध तथा राशि कर्क होती है।

(4) मघा नक्षत्र के चरणों का फलः–

आद्यपादे मघायाः स्यात् मातपक्ष–विनाशनम्।

द्वितीये पितृनाशः स्यात् तृतीये सम्पदः।।

चतुर्थे द्रविणं विद्यादिति शŏरभाषितम्।।

मघा के पहले चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि तथा दूसरे चरण में पिता के लिये अनिष्टकर और तीसरे चरण, में सुख, साधन, धन,

सम्पदा की प्राप्ति तथा चौथे चरण मे भी धन सम्पति एवं उच्च शिक्षा आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

(5) ज्येष्टा नक्षत्र के चरणों का फलः–

ज्येष्टाद्यपादेऽग्रजं हन्ति, ज्येष्ठायां द्वितीयेऽनुजं।

तृतीये मातरं हन्ति, स्वान्मनं च तुरीयके।।

ज्येष्ठा नक्षत्र के पहले चरण में उत्पन्न जातक बड़े भाई को अरिष्टकर होता है। दूसरे चरण में जातक छोटे भाई के लिए अरिष्टकारी होता है। तीसरे चरण में उत्पन्न जातक माता या मातुल पक्ष को अरिष्टकर तथा चतुर्थ चरण में उत्पन्न जातक स्वयं के लिये अशुभ होता है।

(6) **मूल नक्षत्र के चरणों के फलः–**

मूलाद्यचरणे तातो द्वितीये जननी तथा।

तृतीये तु धनं नाश्येत् चतुर्थोऽपि शुभावहः।।

मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक अपने पिता को अरिष्टकर, दूसरे चरण में माता को अरिष्टकर, तीसरे चरण में उत्पन्न जातक पैतृक धन–धान्य का व्यय करता है। चौथे चरण में उत्पन्न बालक द्वारा धन की प्राप्ति होती है अर्थात जमीन जायदाद मकान इत्यादि सभी प्रकार की प्राप्ति होती है। इस की शुरू की दो घड़ियां विशेषतः गण्डांत दोष युक्त मानी जाती है।

अभुक्तमूल गण्डान्त नक्षत्रों का फल

अभी तक हमने नक्षत्रों का चरणों के आधार पर विवेचन किया है अब अन्य आधार पर फल देखेंगे।

अश्विनी मघ मूलानां पूर्वार्द्धे बाध्यते पिता।

पूषाहि शक्रपश्चार्द्धे जननी बाध्यते शिशोः ।।

अश्विनी, मघा, मूला इन तीनों नक्षत्रों का पूर्वार्द्ध भाग पिता के लिये अशुभ फल दायक होता है तथा रेवती, ज्येष्ठा एवं आश्लेषा का उतरार्ध माता के लिये कष्ट कारी होता है।

कुछ ज्योतिष शास्त्रकारों ने किसी गण्डान्त नक्षत्र के सम्पूर्ण भाग को गण्डमूल के प्रभाव से दूषित नही माना बल्कि नक्षत्र की विशेष घड़ी पर ही गण्डान्त दोष की बहुलता को माना है।

(1) आचार्य वशिष्ट ने ज्येष्ठा के अन्त की 1 घड़ी (24 मिनट) और मूला के आरंभ की 2 घड़ी (48 मिनट) यानि कुल तीन घड़ी (72 मिनट) दोनों नक्षत्रों को मिला कर अभुक्त मूल माना है।

(2) आचार्य वृहस्पति के अनुसार ज्येष्ठा के अन्त की ½ घड़ी (12 मिनट) और मूल की प्रथम ½ घड़ी मिलाकर कुल एक घड़ी अभुक्त मूल बनती है।

(3) आचार्य नारद के अनुसार ज्येष्ठा के अन्त की 4 घड़ियां और मूला नक्षत्र के आरंभ की 4 घड़िया अर्थात् कुल 8 घड़िया अभुक्त मूल कहलाते है। अभुक्त मूल नक्षत्र में उत्पन्न बालक माता–पिता, धन सम्पदा आदि की दृष्टि से विशेष अशुभ फल दायक माने जाते हैं। उनकी विधि पूर्वक शान्ति करवाने से कल्याण होता है।

हमारे शास्त्रों में गण्डान्त मूलो के शान्ति के लिये कुछ विधियाँ व समय बताया गया है। शान्ति कराने के लिये जिस नक्षत्र में जातक ने जन्म लिया है उसी नक्षत्र के आने पर 27 दिन या 27 महिने या 27 वर्ष इत्यादि पर उसी नक्षत्र वाले दिन शास्त्रों में बताई गई विधि द्वारा पूजा पाठ, हवन इत्यादि करा कर मूलों की शान्ति करानी चाहिए।

बृहत्यपाराशर होरा शास्त्र के अध्याय 94,95 एवं 96 में तिथि, नक्षत्र, लग्न गण्डान्तों, अभुक्त मूल व ज्येष्ठा आदि गण्डान्तों में उत्पन्न बालकों के शान्ति कर्म के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति गण्डमूल नक्षत्रों में जन्म को गम्भीरता से लेगा तथा उनकी शान्ति कराने को बाध्य होगा।

शोध का उद्देश्य

गण्डमूल नक्षत्रों के बारे में लगभग सभी लोग जानते हैं तथा ज्योतिषियों द्वारा इन नक्षत्रों की शांति कराने के बारे में परिचित भी हैं तथा विश्वास भी रखते है किन्तु प्रायः लोगों को एक एक नक्षत्र अथवा उसके चरणों के फल के बारे में पूरा ज्ञान नही होता। अतः वह ज्योतिष्यिों के ऊपर ही निर्भर करते है। लोगों से बातचीत करने से मुझे ये पता लगा की आम घटना के अनुसार गण्डमुल नक्षत्र वाला व्यक्ति गर्म मिजाज तथा चिड़चिडे स्वभाव का होता है तथा उसके जीवन में सभी कार्यों में अड़चन आती हैं।

शोध के उद्देश्य को मैने मुख्य रूप से निम्न प्रश्नों में विभाजित किया है।

(1) क्या प्रचलित फल का कोई ग्रंथः सम्मत आधार है तथा क्या आम धारणा के अनुसार लोगों का ऐसा ही स्वभाव होता है?

(2) क्या सभी गण्डमूल नक्षत्रों के फल अशुभ ही होते हैं?

(3) व्यवहारिक रूप से क्या गण्डमूल नक्षत्रों के फल जीवन में वैसे ही फल देते है जैसे कि ग्रथों में लिखा है?

(4) क्या शान्ति कराने से फलों की अशुभता पूर्ण रूप में समाप्त होती है अथवा जिन व्यक्तियों ने शांति नही कराई उनके जीवन में विशेष कष्ट रहते हैं?

(5) ग्रंथों में अभुक्त मूल नक्षत्रों अर्थात ज्येष्ठा तथा मूल नक्षत्रों के फल अत्यन्त विनाशकारी लिखे हुए हैं, क्या व्यवहारिक रूप से भी उतने ही विनाशकारी होते हैं?

शोध प्रक्रिया

A. **ग्रंथो का अध्ययनः–** गण्ड़मुल नझत्रों के बारे में मैंने कुछ ग्रंथों के विवरण लिए है जिनके नाम इस प्रकार है

(1) मानसागरी

(2) वृहत्पराशरहृोराशास्त्रम

(3) गण्ड़मूल नक्षत्र–शांन्ति प्रयोग लेखक प0 पन्ना लाल ज्योतिष पचांगकर्ता (दिवाकर पंचांग)

इन ग्रंथों में जो सामग्री मुझे मिल पाई उसे मैंने इससे पहले पृष्ठों में उद्रत किया है, मानसागरी ग्रंथ के अनुसार गण्डमूल नक्षत्रों के फल आश्लेषा के अतिरिक्त अन्य पांच नक्षत्रों के अतिशुभ फल लिखे मिलते है पाराशर होरा शास्त्र में अभुक्त मूल के बारे में बहुँत विनाशकारी फल लिखे हैं तथा लिखा है कि ऐसे नक्षत्र वाले शिशु के पिता को शिशु का त्याग कर देना चाहिए अथवा 8 वर्ष तक पिता को शिशु का मुँह भी नहीं देखना चाहिए।

B. मैंने अपने परिचित व्यक्तियों की तथा उनके आगे उनके परिचित व्यक्तियों से जन्म विवरण लेकर उन सबकी कुण्डली बनाकर तथा उन कुण्ड़लियों को देखकर मैंने उनमें गण्डमूल नक्षत्रों की कुण्ड़लियों का अलग से चयन किया। इस प्रक्रिया के लिए मैंने कुल 460 कुण्ड़लीयो का अध्ययन किया तथा उनमें से 124 गण्डमूल नक्षत्रों की कुण्ड़ली मिली।

C. मैंने इन सभी व्यक्तियों के जन्म से और अब तक शुभ–अशुभ फल जानने के लिए एक फार्म तैयार किया जो इस रिपोर्ट के साथ संलग्न है तथा इस फार्म को मैंने कुल पांच भागो में वितरित किया।

(1) जातक को एक वर्ष में शुभ अशुभ फल उसे या उसके परिवार के किसी भी व्यक्ति को मिले अथवा नहीं मिले

(2) जातक को एक वर्ष के पश्चात शुभ अशुभ फल मिले या नहीं मिले इससे सम्बधित प्रश्न लिखे थे तथा जातक द्वारा बताये गये फलों को (✓) किया।

(3) इस भाग में जातक के जन्म से सम्बंधित सूचना लिखी है तथा जातक किस नक्षत्र में पैदा हुआ वह भी नक्षत्र लिखा हुआ है।

(4) इस फार्म में जो प्रश्न मैंने लिखे थे यदि उन प्रश्नों के अतिरिक्त कोई विशेष फल मिला है तो उस फल का विवरण भी इस भाग में लिखा गया है।

(5) इस फार्म में जो व्यक्ति गण्ड़मुल नझत्रों में पैदा हुऐ है उन्होंने ने गण्ड़मुल शान्ति कराई या नहीं तथा कराई तो कब कराई। इसका विवरण इस भाग में लिखा गया है।

D. (1) मैंने 460 कुण्ड़लीयो का अध्ययन किया उनमें से 124 गण्ड़मूल नक्षत्रों की कुण्डलियो का अध्ययन किया और उनमें से किसने शान्ति कराई या नहीं कराई उनको शुभ अशुभ फल मिले इस बात को ध्यान में रख कर एक विवरण तैयार किया जो आगे सारिणी–**I** में दिखाया गया है।

(2) मैंने सभी गण्ड़मूल नक्षत्र कुण्डलियों को किसे शुभ फल मिला और किसे अशुभ फल मिला इस बात को ध्यान में रखकर एक और विवरण तैयार किया जो आगे सारिणी–**II** में दिखाया गया है ताकि देखा जा सके कि शान्ति कराने व न कराने पर कितनों को शुभ व अशुभ फल मिले।

(3) मैंने सभी बिना गण्ड़मूल अथवा अन्य नक्षत्र वाली कुण्डलियो का भी अध्ययन किया और उसमें किसे एक वर्ष में शुभ और अशुभ फल मिले, किसे एक वर्ष के पश्चात शुभ और अशुभ फल मिले, इस आधार पर एक विवरण तैयार किया तथा कुल 460 जातको को एक वर्ष में कितने और एक वर्ष के पश्चात कितनों को शुभ अशुभ फल मिले इस आधार पर एक विवरण तैयार किया जो आगे सारिणी–**III** पर दिखाया गया है।

(4) हमारे शास्त्रों में अभुक्त मूल का भी विवरण किया गया है जिस में ज्येष्ठा तथा मूल नक्षत्रों को अभुक्त मूल बताया गया है जो गण्ड़मूल नक्षत्रों की कुण्ड़लिया है उनमे से ज्येष्ठा तथा मूल की कुण्डलियों को आधार बनाकर शुभ अशुभ फलो को देखकर एक विवरण तैयार किया है जो आगे सारिणी–**IV** में दिखाया गया है। कुछ ग्रन्थों अथवा विद्वानों के अनुसार ज्येष्ठा का चौथा चरण तथा मूल का पहला चरण ही अमुक्त मूल के अर्न्तगत पड़ता है अतः उसी के अत्याधिक अशुभ फल जातक को मिलते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए सारिणी–**IV** के अन्तर्गत ही एक अन्य सारिणी में उपरोक्त आधार पर शुभाशुभ फलों तथा शान्ति के आधार पर भी फलों का विचार किया गया है।

E. इन सभी विवरणों को ग्रॉफ के रुप में आगे के पृष्टों पर उदृत किया गया है तथा अंत में इस शोध का निष्कर्ष लिखा गया है।

सारिणी – ।

गण्डमूल शान्ति कराने के शुभ-अशुभ फल

A

मूल नक्षत्रों की कुल संख्या	शान्ति कराई		
	हाँ	नहीं	पता नहीं
124	64	50	10
शुभफल	53 (83%)	33 (66%)	6 (60%)
अशुभ फल	11 (17%)	17 (34%)	4 (40%)

B

एक वर्ष के अन्तगर्त कुल संख्या	शान्ति कराई		
	हाँ	नहीं	पता नहीं
13 (10.5%)	5	7	1
शुभफल	1 (20%)	1 (14%)	1 (10%)
अशुभ फल	4 (80%)	6 (86%)	0 (%)

C

एक वर्ष के पश्चात कुल संख्या	शान्ति कराई		
	हाँ	नहीं	पता नहीं
111 (89.5%)	59	43	9
शुभफल	52 (88%)	32 (74%)	5 (56%)
अशुभ फल	7 (12%)	11 (26%)	4 (44%)

सारिणी –।

गण्डमूल नक्षत्रों की शान्ति कराने के शुभ–अशुभ फल

गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के लिये ग्रन्थो में शान्ति कराने की व्यवस्था है ताकि जातक को जीवन में अशुभ फल न मिलें। ये अशुभ फल स्वयं जातक अथवा उसके परिवार के सदस्यों के लिये हानिकारक सिद्ध होंगे। 27वें दिन जन्मोपरान्त जब वही नक्षत्र हो तो शान्ति करा लेनी चाहिये। यदि किसी कारणवश ऐसा न हो सके तो शीघ्र अतिशीघ्र उसी नक्षत्र के दिन शान्ति का विधान है। ऐसा भी माना जाता है कि अशुभफल जन्म के एक वर्ष के अन्तर्गत प्राप्त हो जाने चाहिये किन्तु कुछ विद्वान फल प्राप्ति का समय एक वर्ष के उपरान्त भी मानते है। अतः हमने भी दोनों खण्डों में इसका विश्लेषण किया है।

सारिणी–1 में अंकित तथ्यों के अनुसार निम्न जानकारी प्राप्त हुई :–

1. 460 में मूल नक्षत्र संख्यक जातक 124 निकले। उनमें से 64 जातकों की गण्डमूल शान्ति हुई तथा उनमें से 83% को शुभफल प्राप्त हुए तथा केवल 17% को शान्ति कराने के बाद भी अशुभ फल मिले।
2. जिन 50 जातकों की गण्डमूल शान्ति नहीं हुई उनमें से 66% को शुभ फल तथा 34% को अशुभ फल मिले।
3. 10 जातकों को शान्ति के बारे में ज्ञात नहीं था। इसमें 60% को शुभ व शेष 40% को अशुभ फल मिले। (सारिणी 1A)

निष्कर्ष

गण्डमूल शान्ति कराने वाले 83% जातकों को जहां शुभ फल मिले वहीं जिन जातकों की शान्ति नहीं हुई उनमें से भी 66% को शुभ फल ही मिले। अतः निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि शान्ति कराने पर ही जातक को शुभ फल मिलेंगे। किन्तु यह भी सत्य है कि शान्ति कराने पर 17% अधिक शुभ फल प्राप्त हुए।

एक वर्ष के अन्तर्गत प्राप्त शुभ–अशुभ फल

124 में से केवल 13(10.5%) जातकों को शुभ–अशुभ फल एक वर्ष के अन्तराल में मिले। शान्ति कराने पर भी 80% जातकों को अशुभ फल मिले जबकि शान्ति ना कराने पर भी 86% को अशुभ फल मिले। (सारिणी 1B)

एक वर्ष के पष्चात शुभ–अशुभ फल

111(89.5%) जातकों को एक वर्ष के पश्चात् ही विशेष फल मिले। इनमें से शान्ति कराने पर 88% को तथा शान्ति न कराने पर भी 74% को शुभ फल मिले।
(सारिणी 1C)

निष्कर्ष

एक वर्ष के अन्तर्गत गण्डमूल नक्षत्रों के फल सामान्य रूप से नहीं मिलते क्योंकि 89. 5% को शुभ–अशुभ फल उसके पश्चात् ही मिले। शान्ति कराने पर एक वर्ष के पश्चात शुभ फल प्राप्ति की प्रतिशत 88% थी जबकि नहीं कराने पर 74% को ही शुभ फल मिले। अतः गण्डमूल शान्ति कराना उपयोगी सिद्ध हुआ लेकिन अन्तर केवल 14% का ही था।

सारिणी –2

गण्डमूल नक्षत्र शोध

कुल जातकों की संख्या	:	460
उपरोक्त में गण्डमूल नक्षत्रों वाले जातक	:	124
124 में से जिन्होंने शान्ति कराई	:	64
जिन्होंने शान्ति नही कराई	:	50
जिन्हें शान्ति के बारे में ज्ञात नही	:	10

गण्डमूल नक्षत्रों के शुभ–अशुभ फल

(A) एक वर्ष के अन्तगर्त

कुल संख्या	अशुभ फल	शुभफल
13(10.5%)	10 (76.9%)	3 (23.1%)
	शान्ति कराई	शान्ति कराई
	हाँ नहीं पता नही	हाँ नहीं पता नही
	4 6 –	1 1 1
	(40%) (60%) (0%)	(33.3%) (33.3%) (33.3%)

(B) एक वर्ष के पश्चात

कुल संख्या	अशुभ फल	शुभफल
111 (89.5%)	22 (19.8%)	89 (80.2%)
	शान्ति कराई	शान्ति कराई
	हाँ नहीं पता नही	हाँ नहीं पता नही
	7 11 4	52 32 5
	(31.8%) (50%) (18.2%)	(58.4%) (36%) (5.6%)

(C)

योग (A+B)	अशुभ फल	शुभफल
124	32 (25.8%)	92 (74.2%)
	शान्ति कराई	शान्ति कराई
	हाँ नहीं पता नही	हाँ नहीं पता नही
	11 17 4	53 33 6
	(34.4%) (53.1%) (12.5%)	(57.6%) (35.9%) (6.5%)

सारिणी–2

यहाँ गण्डमूल नक्षत्र वाले जातकों के शुभ–अशुभ फलों का शान्ति के आधार अधिक सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

एक वर्ष के अन्तर्गत

76.9% लोगों को अशुभ फल मिले जबकि उनमें से 40% ने शान्ति भी कराई थी। 23.1% जातकों को शुभ फल प्राप्त हुए जबकि उनमें से 33.3% ने ही शान्ति कराई थी। (सारणी2A)

एक वर्ष पष्चात्

अशुभ फल केवल 19.8% को ही मिले जबकि उनमें से 31.8% ने शान्ति भी कराई थी। (सारणी 2B)
इसके विपरीत 80.2% जातकों को शुभ फल प्राप्त हुए जबकि उनमें से 58.4% जातकों की गण्डमूल शान्ति कराई गयी थी।

निष्कर्ष

74.2% जातकों को शुभ फल ही प्राप्त हुए जबकि इनमें से 35.9% जातकों ने शान्ति भी नहीं करायी थी। अशुभ फल पाने वालों की संख्या केवल 25.8% थी जबकि उनमें से 34.4% ने शान्ति भी कराई थी। अतः गण्डमूल नक्षत्र के जातकों को अधिकांश रुप से शुभ फल ही मिले तथा शान्ति कराने या ना कराने का कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा।

सरिणी – 3

अन्य नक्षत्रों के शुभ–अशुभ फल **A**

(अ) एक वर्ष के अन्तगर्त

कुल संख्या	अशुभ फल	शुभ फल
36	27 (75%)	9 (25%)

(ब) एक वर्ष के पश्चात्

कुल संख्या	अशुभ फल	शुभ फल
300	47 (15.66%)	253 84.34%)

(स) योग (अ+ब)

कुल संख्या	अशुभ फल	शुभ फल
336	74 (22%)	262 (78%)

(गण्डमूल + अन्य नक्षत्र) B

कुल योग 460	अशुभ फल 106 (23.05%)	शुभ फल 354 (76.95%)
एक वर्ष के 49 अन्तर्गत	37 (75.5%)	12 (24.5%
एक वर्ष के पश्चात 411	69 (16.79%)	342 (83.21%)

सारिणी–3
गण्डमूल के अतिरिक्त अन्य नक्षत्रों के शुभ–अशुभ फल

कुल 336 जातकों में से 78% को शुभ तथा केवल 22% को अशुभ फल प्राप्त हुए।

एक वर्ष के अन्तर्गत शुभ फल 25% जातकों तथा अशुभ फल 75% को मिले।

एक वर्ष के पश्चात शुभ फल प्राप्त करने वालों की प्रतिशत लगभग 84% निकली जबकि अशुभ फल वाले जातक केवल 16% ही थे। (सारणी 3A)

निष्कर्ष

अन्य नक्षत्रों में उत्पन्न जातकों को अधिकांश रुप से एक वर्ष के अन्तर्गत ही अशुभ फलों की प्राप्ति हुई (75%) जबकि एक वर्ष के पश्चात् 84% जातकों को शुभ फल ही मिले।

सभी नक्षत्रों को मिलाकर शुभ–अशुभ फल

कुल 460 जातकों में से लगभग 77% को शुभ तथा केवल 23% को अशुभ फल मिले।

एक वर्ष के अन्तर्गत शुभ फल केवल 24.5% निकली जबकि एक वर्ष के पश्चात् बढ़कर 83% हो गयी। (सारणी 3B)

निष्कर्ष

एक वर्ष के अन्तर्गत अशुभ फलों का प्रतिशत 76% था जबकि एक वर्ष के पश्चात् इसके विपरीत शुभ फलों का प्रतिशत 83% हो गया।

इसका अर्थ है अन्य नक्षत्रों तथा कुल सभी नक्षत्रों के शुभाशुभ फल एक समान ही हैं।

सारिणी –4

अभुक्त मूल नक्षत्र

ज्येष्ठा 1 से 4 चरण तक

A	शान्ति कराई	
कुल संख्या	हां	नही
22	10	12
शुभ	8 (80%)	9(75%)
अशुभ	2 (20%)	3(25%)

मूल 1 से 4 चरण तक

B	शान्ति कराई	
कुल संख्या	हां	नहीं
11	6	5
शुभ	6 (100%)	1 (20%)
अशुभ	0 (%)	4 (80%)

ज्येष्ठा तथा मूल संयुक्त रूप से

C	शान्ति कराई	
कुल संख्या	हा	नहीं
33	16	17
शुभ	14(87.5%)	10 (58.8%)
अशुभ	2(12.5%)	7 (41.2%)

केवल ज्येष्ठा 4

D	शान्ति कराई	
कुल संख्या	हां	नही
7	5	2
शुभ	4 (80%)	2 (100%)
अशुभ	1 (20%)	0 (0%)

केवल मूल 1

E	शान्ति कराई	
कुल संख्या	हां	नहीं
2	1	1
शुभ	1 (100%)	0 (0%)
अशुभ	0 (%)	1(100%)

ज्येष्ठा 4 तथा मूल 1 संयुक्त रूप से

F	शान्ति कराई	
कुल संख्या	हां	नहीं
9	6	3
शुभ	5(83%)	2 (67%)
अशुभ	1(17%)	1 (33%)

अभुक्तमूल नक्षत्रों के शुभ–अशुभ फल

ज्येष्ठा तथा मूल नक्षत्रों के सभी चरण लेने पर कुल 33 जातकों में से 16 ने शान्ति कराई तथा 17 ने नहीं कराई। शान्ति कराने वाले 87.5% जातकों को तथा नहीं कराने वाले 58.8% जातकों को शुभ फलों की प्राप्ति हुई। अतः शान्ति कराने पर लगभग 29% अधिक जातकों को शुभ फल मिले। (सारिणी 4–ABC)

केवल ज्येष्ठा–4 तथा मूल–1 लेने पर

कुल 9 जातकों में से 6 ने शान्ति कराई तथा 3 ने नहीं कराई। शान्ति कराने पर 83% तथा नहीं कराने पर 67% जातकों को शुभ फल मिले। (सारिणी 4–DEF)

निष्कर्ष

शान्ति कराने या न कराने पर भी अधिकांश जातकों को शुभ फल ही मिले यद्यपि शान्ति कराने पर शुभ फलों की प्रतिशत लगभग 20% से अधिक बढ़ी। यह भी सिद्ध होता है कि अमुक्त मूल जातकों को भी लगभग वैसे ही शुभ–अशुभ फल प्राप्त होते है जैसा कि अन्य नक्षत्र वाले जातकों को।

शोध का अन्तिम निष्कर्ष

1. गण्ड मूल नक्षत्रों के विषय में ग्रन्थों में जिस प्रकार के अशुभ फलों का वर्णन किया गया है वैसे परिणाम इस शोध में प्राप्त नहीं हुए। इसी प्रकार अभुक्त मूल नक्षत्रों में जन्मे जातकों के विषय में ग्रन्थों में जिस प्रकार भयावह वर्णन किया गया है वह भी सिद्ध नहीं हुआ।
2. मानसागरी ग्रन्थ में गण्डमूल नक्षत्रों के बारे में आश्लेषा के अतिरिक्त सभी अन्य पाँच नक्षत्रों के फल शुभ ही वर्णित किये गये हैं अतः शोध में प्राप्त फल भी लगभग वैसे ही मिलें है।
3. पाराशर हौरा शास्त्र में वर्णित सभी गण्ड मूल नक्षत्रों, विशेष रुप से अभुक्त मूल सम्बन्धी अशुभता तथा उनकी शान्ति के विस्तृत उपायों पर जिस प्रकार का भय उत्पन्न किया गया है वैसा फल वास्तविक रुप से शोध में प्राप्त नहीं हुआ।
4. आंकड़ों के अध्ययन से यद्यपि सिद्ध होता है कि जिन जातकों की गण्डमूल शान्ति कराई गई उन्हें शुभ फलों की प्राप्ति अधिक हुई बजाय उनके जिन्होंने शान्ति नहीं कराई। यह अन्तर 14% से 29% तक रहा।
5. एक वर्ष के अन्तर्गत केवल 10.5% जातकों को जबकि उसके पश्चात् 89.5% जातकों को गण्डमूल नक्षत्रों के शुभाशुभ फल प्राप्त हुए। अतः सिद्ध हुआ कि जन्म के एक वर्ष पश्चात् ही शुभाशुभ फल मुख्यतः प्राप्त होते हैं।
6. गण्डमूल नक्षत्र हो या अन्य नक्षत्र अथवा उनका कुल योग, मुख्यतः शुभ फलों की प्राप्ति की प्रतिशत अधिक रही तथा एक वर्ष के पश्चात् ही मुख्य रूप से जातकों को शुभाशुभ फल मिले।

कुण्डली विश्लेषण के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है जैसे कि कुण्डली की लग्न राशि के अनुसार शुभ–अशुभ ग्रहों का दशान्तर्दशा व गोचर गत विचार, भाव फल, कुण्डली में बनने वाले विभिन्न शुभाशुभ योग आदि। मुहूर्त सम्बन्धी अंगों यानि तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण की भूमिका संभवतः गौण ही है। इसीलिये केवल जन्म नक्षत्र के फल पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देना अवांछनीय होगा। गण्डमूल नक्षत्रों व अन्य नक्षत्रों में फलों के आधार कोई विशेष अन्तर देखने को नहीं मिला।